<u>कपास की खेती के लिए साप्ताहिक सलाह सं 1/2015</u>

भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान

कपास की खेती के लिए 11 से 17 जून साप्ताहिक सलाह

(30 मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	जून माह में वर्षा की स्थिति (मिली ली॰)							साप्ताहिक सलाह
दिनांक	9	10	11	12	13	14	15	
पंजाब								
भटिंडा				3				कपास की बुआई अभी न करें। 31 मई के बाद बोया फसल में पर्ण कुंचन रोग (लीफ कर्ल वायरस) से अत्यधिक खतरा हो सकता है । चूसने कीट समस्याओं से बचने के लिए नाइट्रोजन के उपयोग से उपयोग न करें । किसी भी कीटनाशक अत्यधिक स्प्रे न करें।
फिरोजपुर				3				
मुकतसर								
मानसा								
हरियाणा								
सिरसा								कपास की बुआई अभी न करें। 31 मई के बाद बोया फसल में पर्ण कुंचन रोग (लीफ कर्ल वायरस) से अत्यधिक खतरा हो सकता है । चूसने कीट समस्याओं से बचने के लिए नाइट्रोजन के उपयोग से उपयोग न करें । किसी भी कीटनाशक अत्यधिक स्प्रे न करें।
हिसार								
फ़तेहाबाद								
राजस्थान								
हनुमानगढ़								कपास की बुआई अभी न करें। 31 मई के बाद बोया फसल में पर्ण कुंचन रोग (लीफ कर्ल वायरस) से अत्यधिक खतरा हो सकता है । चूसने कीट समस्याओं से बचने के लिए नाइट्रोजन के उपयोग से उपयोग न करें । किसी भी कीटनाशक अत्यधिक स्प्रे न करें।
श्रीगंगानगर								
बांसवाड़ा								
उड़ीसा								
कोरापुट		5		10	74	9		इस सप्ताह कपास की बुआई किसी भी समय कर सकते हैं ।
कालाहांडी		9		13	68	12		
बोलांगीर				8	41	18		
गुजरात								
अमरेली		26	15		4	12		यदि सिचाई की व्यवस्था हो तो, इस सप्ताह कपास की बुआई कर सकते हैं ।
भावनगर		26	15		4	12		
जामनगर		26	16		4	12		
अहमदाबाद		2	2		8			वर्षा सिंचित खेत्र के किसान बुवाई के लिए खेत तैयार रखें। स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।
सुरेन्द्रनगर		2	2		8			
वडोदरा		10	19		8			सिचाई व्यवस्था सुनिश्चित हो तो, बुवाई के लिए खेत तैयार रखें। स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।
राजकोट		12	10		8			
भरूच		10	4		8			स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।

पाटन								खेत तैयार रखें।
सबरकांठा								
मेहसाना								
मध्यप्रदेश								
खरगोन								इस सप्ताह कपास की बुआई न करे।
धार		8		3	4			
खंडवा								
महाराष्ट्र								
नागपुर			3	3	8	5		स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।
वर्धा	4	2	3	3	12	5		
चंद्रपुर	4	2	4	5	15	2		
यवतमाल	6		2		15	1		
अमरावती	10	2	10		12			
अकोला	14				7			
बुलढाना	15		3	3	12			
परभणी	6	11		6	3			
नांदेड़	6	14		33	5			यदि सिचाई की व्यवस्था हो तो, इस सप्ताह कपास की बुआई कर सकते हैं ।
बीड़	11	6	4					स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।
वासिम	21		1		10			यदि सिचाई की व्यवस्था हो तो, इस सप्ताह कपास की बुआई कर सकते हैं ।
धुले	41	6	11	10	7			
जलगांव	34	6	11	10	7			
जालना	4	4		3				
औरंगाबाद	14	3	6	8	4			स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।
तेलंगाना								
आदिलाबाद		4	20	14	19	4		स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।
वारंगल		25	30	12	6	5		इस सप्ताह कपास की बुआई कर सकते हैं
खम्मन		25	50	10	6	4		
कारिंगर		15	20	10	12	3		स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।
नालगोंडा		15	20	8	6			स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर		12	50	10	6	8		इस सप्ताह कपास की बुआई कर सकते हैं
प्रकासम		10	15	12	5	12		स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।
कर्नाटक								
धारवाड़		2	2	7	5	3		स्टाम्प (पेंडामिथाईलीन) शाकनाशी (हर्बीसाइड) के पूर्व उद्भ्व के लिए किया जा सकता है।
हवेरी		2	2	5	5	6		
मैसूर		3	3	5	4	6		
तमिलनाडु								
पेरंबलुर		3						
सलेम		5	2		4	3		

त्रिची		2						
विरडुनगर		1		4	4			

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80

उत्तर भारत:

- फसल अंकुरण चरण (स्टेपलिंग स्टेज) में है |
- इस ऋतु वर्ष के लिए “सी आई सी आर और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों” द्वारा सिफारिश की गई कपास की जल्दी परिपक्व होने वाली बीटी संकर या अगती किस्मे पर्ण कुंचन रोग (लीफ कर्ल वायरस रोग) के लिए प्रतिरोधी थे इस वर्ष के लिए भी उन्ही किस्मों की सिफारिस की जाती है
- कपास की देसी किस्मे पर्ण कुंचन रोग के लिए प्रतिरोधी हैं अतः उत्तर भारत के लिए देसी उन्हीं को क़िस्मों की जोरदार सिफारिस की जाती है।
- फसल के अवशेषों और आकार में समान कपास के पौधों को नष्ट कर दिया जाना चाहिए।
- किसान को खरपतवार एवं इतसित के प्रबंधन करने की सलाह दी जाती है।
- थ्रिप्स कीटों का संक्रमन अंकुर स्तर (सीडलिंग स्टेज) पर हो सकता है, लेकिन शायद ही वे कभी आर्थिक नुकसानदेय होते हैं चूसक कीट (थ्रिप्स) के संक्रामण की नियमित निगरानी किया जाना चाहिए।
- अनावशक कीटनाशक स्प्रे करने से बचें।

मध्य और दक्षिण भारत:

- गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उड़ीसा के लिए 15 से 25 जून के बीच इस सीजन में बुवाई आदर्श
- दक्षिण भारत में बुवाई जुलाई से आगे नहीं बढ़ाया जाना चाहिए 15
- वर्षा आधारित क्षेत्रों विशेष रूप (बोरानी) से में उच्च घनत्व रोपण प्रणालियों में लकीरें पर बुवाई सबसे अच्छा माना गया है।
- वर्षा सिंचित क्षेत्रों में, बुआई 8 से 10 से. मी. वर्षा के बाद किया जाना चाहिए।
- बीटी कपास की संकर क़िस्मों को या जल्दी परिपक्व वाली क़िस्मों को प्राथमिकता देना चाहिए।

- वर्षा आधारित क्षेत्रों में संकर बीटी कपास 90 x 10 से. मी. दूरी पर बोना चाहिए है। इन किस्मों को उच्च घनत्व रोपण प्रणाली में
- गैर बीटी किस्मों-जैसे एके सूरज (सीईसीआर), एनएच 615 (वीएन-एमएयू) परभणी, एकेएच 081 (डॉ. पीडीकेव्ही अकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेव्ही राहुरी) जल्दी परिपक्व होते हैं। इसे जून 15 से पहले बोया जाता है तो फसल बालीवर्म एवं सूखा तनाव से बच जाएगा।
- कपास के गैर बीटी किस्मों को उच्च घनत्व प्रणाली का उपयोग कर ब्राडयरिजोबियम जेपोनिकम से उपचरित करके सोयाबीन के बीज या लोबिया और काला चना के साथ सेमी 45 पंक्ति से पंक्ति दूरी तथा सेमी पौधे से दूरी।
- पर एक के बाद एक10 पंक्ति पर अंतरफसल के रूप में भी लगाया जा सकता है।
- कपास के बीटी किस्मों को उच्च घनत्व प्रणाली का उपयोग कर ब्राडयरिजोबियम जेपोनिकम से उपचरित सोयाबीन के बीज या लोबिया और कालाचना की एक पंक्ति और कपास दो पंक्ति के साथ अंतरफसल के रूप में भी लगाया जा सकता है।
- कपास के खेतों की सीमा में या आसपास अरहर की 2-3 पंक्तियाँ रिफ़्युजिया के रूप में सेवा करते हैं।
- वीडिसाइड स्टोम्प 30 ईसी या बेसलीन 45 ईसी 2.5i t / हेक्टयर के उपयोग खरपतवार के पूर्व उद्भव रोकने के लिए किया गया हो तो तुरंत हैरो करने से यह छिढ़काव प्रभावी रहता है।
- पहली बारिश के बाद खेत खाद (ई मेन्योरफार्म या)या गोबर खाद 5से 10 टन प्रति हेक्टेयर खेतो में डालना चाहिए।
- एजोटोबेक्टर और पीएसबी दोनों का 25 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में इस्तेमाल पोषकतत्वों के स्थिरीकरण के लिए किया जाना चाहिए।
- इमिडाक्लोप्रीड (8 ग्रा.), विटावेक्स या थिरम (3 ग्राम.) प्रति किलोग्राम बीज चूसक कीट एवं रोगों के खिलाफ कपास की किस्मों की रक्षा करेगा।

भाकृअनुप-सीआईसीआर द्वारा सिफारिस की गयी प्रबंधन रणनीतियाँ:

नाशीकीट प्रबंधन

सामान्य सिफारिशें

ये करें:

- रसचूसक कीटों के लिए प्रतिरोधी क़िस्मों/संकरोंका चुनाव करें। रसचूसक कीटों के लिए प्रतिरोधी बीटी संकरों पर कीटनाशकों के बहुत कम छिडकावों की अवश्यकता होती है।
- रसचूसक कीटों के भक्षक कीटों को बढ़ावा देने के लिए लोबिया या ज्वार या उड़द या सायाबीन की अंतः फसल लें।
- इमिडेक्लोप्रिड @ 7 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से बीजोंपचार करें।
- विशेषत: रसचूसक कीटों के लिए सवेदन क़िस्मों में नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का न्यूनतम उपयोग।
- फसल को खरपतवारों से मुक्त रखें और मिलिबग से ग्रस्त पौधों को धीरे- से उखाड़ कर नष्ट कर दें।
- बुवाई के 30-40 दिनों व 50-60 दिनों बाद फूलकीट, मिरीड बग और दूसरे रस चूसक कीटों के पर्यावरण हितैषी नियंत्रण के लिए इमिडेक्लोप्रिड, डाइमेठोएट या एसिफेट का पौधों के तने पर या पौधों के तने पास मिट्टी में अनुप्रयोग।
- ये ना करें:
- फसल के पहले दो महीनों में मित्र कीटों के संरक्षण के लिए रासायनिक कीटनाशकों के छिड़काव को यथा संभव टालें। नैसर्गिक रूप से पाये जाने वाले लाभदायक कीट लेडी बर्ड बीटल, क्रायसोपर्ला, जीकोरिस बग, एफिलिनस उनके शिशु व प्रौढ़, सरफीड मक्खी, मिरीड बग, मकढ़ियों आदि का संरक्षण होता है। ये मित्र कीट चेंपा, जेसिड, फूलकीट, मिरीड, सफेद मक्खी तथा मिली बग का कारगर तरीके से नियंत्रण करते हैं।
- लेपिडोप्टेरा आडर के कम हानिकारक नाशिकीटों जैसे पत्ती लपेटक साइलेप्टा डेरोगेटा व अर्धकुंडलक एनोमिस फ्लेवा के लिए फसल पर छिड़काव न करें। इन कीटों की इल्लियां कपास को बहुत कम नुकसान पहूंचाती है लेकिन ट्रायकोग्रामा प्रजाति, सिसिरोपा फोरमोसा, एपेंटेलिस प्रजाति जैसे परजीवयों के लिए परपोषी का कम करते हैं।
- भविष्य में चयन दबाव से बचने के लिए बीटी कपास पर बीटी कीटनाशक का छिड़काव ना करें।
- एसिटामीप्रिड, इमिडेक्लोप्रिड, क्लोथिएनिडिन व थायोमेथोक्शाम जैसे निओनिकोटीनाइड समूह के कीटनाशकों का फसल पर छिड़काव करने से बचें।

- डब्लूएचओ वर्ग-1 श्रेणी (अति हानिकारक श्रेणी) के कीटनाशकों जैसे फोसफेमिडान, मिथाइल पैराथिओन फोरेट, मोनोक्रोटोफास, डाइक्लोरवास, कार्बोफ्यूरान, मिथोमिल,ट्रिजोफोस, तथा मेटासिस्टोक्स का अनुप्रयोग ना करें।
- सफेद मक्खी के महाप्रकोप से बचने के लिए फिप्रोनिल तथा पायरेथ्रोइड जैसे कीटनाशकों के छिड़काव से बचें।

रसचूसक कीटों का प्रबंधन:

आर्थिक हानि सीमा (ईटीएल): यदि सफेद मक्खी तथा जेसिड की हानि का स्तर आर्थिक हानि सीमा ग्रेड अर्थात निचली पतियों के मुड़ने और सिकुड़ने तथा किनारों से पीले पड़ना आदि 25%या अधिक पौधों मे दिखाई दे तो नीचे दिये गए नियंत्रण उपाय अपनाए:

अ) नीम तेल 1.0 % + नीबोलीगिरी 5.0% + 0.05-0.1 डिटर्जेंट ।

आ) वर्टीसीलियम लेकानी @ 10 ग्राम/ प्रति लीटर पानी; अच्छे सूत्रण विश्वसनीय निर्माताओं से ही खरीदें।

इ) डाइफेन्थियूरोन (50 WP 800 ग्राम /हे.)

ई) फ्लोनिकोमिड 50 W G 200 a i / हे. या

उ) बुप्रोफेजीन 25% S C 200 ग्राम a i / हे

पर्यावरण सुरक्षा, पारिस्थितिकी प्रभावकारिता और प्रतिरोध से संबंधित कारकों को ध्यान में रखते हुए कीटनाशक जैसे डाइमेथोएट या एसिफेट या इथिओन का भी इस्तेमाल सिर्फ विकल्प के रूप में किया जा सकता है।

यदि कलियों (स्क्वेयर) को मिरीड बग के प्रकोप का आर्थिक नुकसान दिखाई दे तो एसिफेट 75 एसपी या डाएमेथोएट @ एक ग्राम प्रति लीटर पनि की दर से छिड़काव करें।

गूलर की सूंडियों का प्रबंधन:

गूलर की सूंडियों की नियन्त्रण करने मेन बीटी कपास प्रभावी है।

गैर बीटी कपास के लिए निम्न रणनीति की सिफारिस की जा रही है: अमेरिकन सूँडी (हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा) द्वारा 50% पौधों पर कलियाँ ग्रस्त होने पर इस आर्थिक हानि स्तरपर निम्न उपाय करें:

1) बीटी कपास के फसल पर एचएएनपीबी (H a N P B) का छिड़काव करें, इसके एक सप्ताह बाद 5% निबोली गिरी का छिड़काव करें या गूलर की सूंडियों स्पोडोप्टेरा

(तम्बाखू की इल्ली) या सफ़ेद मक्खी के नियन्त्रण के लिए आर्थिक हानि स्तर पर फोसलोन कीटनाशक का प्रयोग करें।

2) बुवाई के 70-80 दिनों बाद बीटी रहित कपास पर उपलब्ध होनेन पर ट्रायकोग्रामा का प्रयोग करें।

3) गूलर की सूंडियों, विशेष रूप से, हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा नियन्त्रण के लिए प्रभावी कीटनाशक निम्न है:

क) क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल (कोरजेन)

ख) फ्लुबेनडाइमाइड (फेम)

ग) स्पीनोसेड

घ) इमामेक्टीन बेंजोएट तथा

ङ) इंडोक्साकार्ब

ये कीटनाशक लक्षित नाशीकीटों के लिए चयनित अति विषैले है जबकि कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लिए कम विषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरोधिता प्रबंधन कार्यक्रम के लिए उपयुक्त है।

4) गुलाबी सूँडी और चितिदार सूँडी : इनके लिए आर्थिक हानि सीमा है – 10 हरे गुलरों में एक जीवित सूँडी मिलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (किट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 इसी या का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से या थायोडिकार्ब 75 डब्लू पी (W P) का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।

5) स्पोडोप्टेरा लिटुरा: इस इल्ले के अँड पुंजों को हाथ से एकत्र करें या एसएनपीवी का 500 एल ई / हे. अथवा रिमोन 10 एल ई का 200 मिली अथवा लार्विन 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी प्रति एकड़ छिड़काव करें।

6) प्ररोह घुन के नुकसान को कम करने के लिए प्रोफ़ेनोफास 50 ई सी का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर एसआर फसल पर छिड़काव करें।

7) अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल किल) 12.5 कि. ग्रा. / हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें, मेढों फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायी दे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैराविल्ट) मुरझान/ जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सिचाई करने परइसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभावित पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 मि. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभावित पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बेडेजिम 1 ग्रा./ लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर मिट्टी को तर करें।

गूलर सड़न: साधारणतः प्रारम्भिक विकसित पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिमझिम बारिस होते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थेलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लिए सिल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइट्न 50 मिली 100 लीटर पानी की दर से मिलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी : मेंकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव क्रेन।

माइरोथेसियम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा: स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा. /हे.) + कापरआक्सीक्लोराइड (1500-2000 ग्रा./हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन:

छोटे खरपटवारों पर खरपतवारनाशक अधिक प्रभावी होते हैं।

खरपतवार उगने के बाद प्रयोग में आने वाले खरपतवारनाशक (50 से 75 ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति है. की दर से)

घांसें : क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्साप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफ़ोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासें: प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: पाइरोथियोबेक सोडियम का छिड़काव करें।

खरपटवारों उगने पर खरपतवारनाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है। खरपतवारनाशी (हर्बीसाइड) नवजात खरपतवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अधिक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घाँसकुल के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए क्लोजईलोफोप-इथाइल, फेनोक्सप्रोप सोडियम, फ्लुयाजीफोप ब्यूटाइल,का

प्रयोग कर सकतें हैं। नरकर और घासों के लिए पायरिथोबक ईथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों के लिए पायरीओथिबेक सोडियम कारगर है। अधिक जानकारी के किए कृषि विश्वविधालयों ए तकनीकी विशेषज्ञों से विचार विमर्श कर सकते हैं।

जलजमाव (वाटर लागिंग) प्रबंधन:

जलमग्नता प्रबंधन:

कपास की फसल अधिक पनि के लिए संवेदनशील है अधिक वर्षा के कारण देश के मध्य और दक्षिणी क्षेत्रों में जल मग्नता एक समस्या बन सकती है। गहरी काली मृदाओं और पनि की अच्छी निकासी न होने की स्थिति में कपास की फसल जेल जमाव से सबसे ज्यादा दुष्प्रभावित होती है। अधिक वर्षा वाली परिस्थितियों में पनि की निकासी के लिए विशेषतः काली मिट्टी वाली खेत में ढलान के साथ साथ पर्याप्त नालियाँ बनाए। बेहतर मृदा नमी संरक्षण के लिए विशेषतः जिन क्षेत्रों में मिमी वर्षा होती है उन क्षेत्रों मई मेढ़ बनाने वाले 900-700 यंत्र या रिजर की सहायता से मेढ़ व नाली बनाए। इस तकनीक और मेढ़ों पर कपास की बुवाई करने से वर्षा जल का संरक्षण होगा और अतिरिक्त जल खेत से बाहर निकाल जाएगा। यह तकनीक भारी काली मिट्टी में और अधिक वर्षा वाले क्षेत्र मै उपयुक्त है।

खेत के किनारों पर जल निकासी के लिए नालियां बनाए। इससे अतिरिक्त पानी खेत से बाहर निकल सकेगा। नाली-मेढ़ पद्धति (रिजेज़) में मेढ़ के ऊपर तुरंत बुवाई करने की सिफारिस की जाती है। इस पद्धति के उपयोग से भारी वर्षा का फसल पर दुष्प्रभाव नहीं होगा। जलमग्नता से यदि फसल पीली पड़ जाए तो उर्वरकोंका अनुप्रयोग करें। यदि भारी वर्षा की भविष्यवाणी की गई है तो उर्वरकों का अनुप्रयोग टाल दें जिससे सतह पर से उर्वरक बह जाने वाले नुकसान से बचा जा सके।

जलमग्नता के दुष्प्रभाव से फसल को जल्दी उबारने के लिए साप्ताहिक अंतराल में फसल पर 0.5 से 1.0 % डीपीए अथवा 19:19:19: नाइट्रोजन का घुलनशील योग छिड़काव करें।

सामान्य फसल स्वस्थ्य प्रबंधन :

1) स्थूल व सूक्ष्मपोषकतत्वों का प्रबंधन बेहतर करें।

मेग्नेशियम सल्फेट 0.5 %, यूरिया 2 % का फसल पर छिड़काव करें। इसके बाद 2 % डीपीए का छिड़काव क्राय-1 एसी की उचित अभिव्यक्ति तथा

लालपत्ती रोग में कमी लाना सुनिशित करने के लिए इनका फसल पर छिड़काव करें। मुरझान रोग की प्रारम्भिक अवस्था में तुरंत 1 % कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव तथा बाबिस्टीन 1 % घोल से पौधों की जड़ के पास की जमीन को तर करने से क्षति पूर्ति हो सकती है।

2) लालपत्ती की रोक थाम के लिए 2 % यूरिया, 0.5 % जिंक सल्फेट तथा 2% बोरान का 15 दिनों के अंतराल में छिड़काव फसल के 90 दिनों के होने पर करें।

3) कली और फूलों के धारण के लिए: प्लानोफिक्स 4.5 एसएल (एनएए) हार्मोन @ 21 पीपीएम (7 एमएल प्रति 15 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डीसूज़ा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (तमिलनाडु)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत सिंह	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, (पंजाब)	9463628801	rsmeenars@gmail.com
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, (पंजाब)	9464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	9416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, सिरसा-124004 (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द राजस्थान, कृषि विश्वविद्यालय, गंगानगर (राजस्थान)	9352700411	bsmeena1969@rediffmail.com

डॉ. हरफूल मीणा	महारणा प्रताप, कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	9460246043	hpagron@rediffmail.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)	9335699132	jagdishk64@yahoo.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	9662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. एम.डी. खानपारा	जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ -362001 (गुजरात)	9426990070	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्लू. भरूद	महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, रीउरी-413722 (महाराष्ट्र)	9850244087	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	9657725801	srscottonpdkv1@yahoo.co.in
डॉ.पी.आर.झॉंवर	मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय, प्रभनी-431402 (महाराष्ट्र)	7588151244	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	9406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	9437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, नांदयाल (आंध्रप्रदेश)	08514-242296	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	9448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृषि विश्वविद्यालय, रायचूर-584102 (कर्नाटक)	9448633232	bheemuent@rediffmail.com

-- इति --

हिन्दी संसकरण:

रजनीकान्त चतुर्वेदी,
तकनीकी अधिकारी एवं हिन्दी अधिकारी,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)